शिक्षा का उत्थान

शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-४

माह : अक्टूबर २०२०

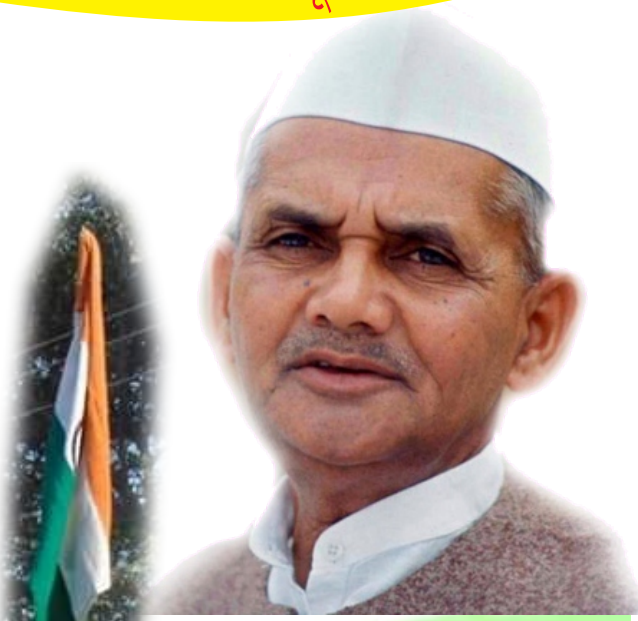

आओ हाथ से हाथ मिलाएं,

बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-४

माह- अक्टूबर २०२०

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन

प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

सुश्री ज्योति कुमारी

आनन्द मिश्र

सह सम्पादक

डॉ० अनीता मुद्गल

आशीष शुक्ल

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

आनन्द मिश्र, अफजाल अहमद

विशेष सहयोगी

शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

किसी बालक की शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कई स्तरों पर अलग–अलग पदासीन व्यक्तियों का योगदान रहता है। इन व्यक्तियों में अधिकारी भी सम्मिलित होते हैं, प्रबन्ध समिति के सदस्य भी, अभिभावक भी, सामाजिक कार्यकर्ता भी, शासन–प्रशासन भी। लेकिन शिक्षा के सर्वाधिक उत्तरदायी व्यक्ति यानी कि शिक्षक का योगदान इसमें सबसे अहम होता है। शिक्षक के संदर्भ में एक साधै, सब सधै की उक्ति महत्व रखती है। वह शिक्षक ही होता है जो अशिक्षित या अल्पशिक्षित अभिभावकों को शिक्षा का महत्व बताता है और ग्राम प्रधान को विद्यालय के विकास के लिए प्रेरित करता है। वह शिक्षक ही होता है जो कागज, कलम पकड़ाकर एक बालक को भावी नागरिक बनाने के लिए पहले दिन से ही प्रयास आरम्भ कर देता है।

शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह ठहरा हुआ पानी न बनकर एक बहती हुई नदी बने। एक निश्चित शिक्षण पद्धति और पुरातन ढर्रे पर न चलकर शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रयासों से साम्य बनाना और स्वयं को सदा उन्नत रखने का प्रयास करने वाला शिक्षक ही आज सफल है। हमारे लिए यह गर्व का विषय है कि शिक्षकों के पास मिशन शिक्षण संवाद जैसा मंच है जो शिक्षकों को प्रतिपल नवीन ऊर्जा से आच्छादित रखता है। किसी शिक्षक का कोई नवाचार अब किसी एक विद्यालय में सीमित नहीं रह जाता अपितु मिशन शिक्षण संवाद के बड़े नेटवर्क की सहायता से प्रदेश के कोने–कोने तक पहुँच रहा है। यहाँ कोई प्रेरित कर रहा है तो कोई प्रेरित हो रहा है। हाल ही में वाराणसी में हुई मिशन शिक्षण संवाद की गुणवत्ता संवर्धन कार्यशाला में शिक्षकों ने दिखाया कि वो मिशन प्रेरणा के लक्ष्यों को पाने के लिए एक से एक उत्तम योजनाएँ बनाए बैठे हैं। महामारी के इस दौर में जब ऑफलाइन शिक्षा देना संभव नहीं है तब मिशन शिक्षण संवाद ने ही ऑनलाइन शिक्षा का मार्ग दिखाया है।

अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि मिशन शिक्षण संवाद प्रतिमाह एक पत्रिका का भी प्रकाशन कर रहा है। शिक्षित समाज के लिए और शिक्षित समाज बनाने के लिए यह प्रयास अत्यंत ही सराहनीय है। मैं पत्रिका के आगामी अंक के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

राकेश सिंह
जिला बंसिक शिक्षा अधिकारी
वाराणसी

सम्पादकीय

दीवारों पर बाल अधिकार लिखाने से कुछ नहीं होगा। केवल कायाकल्प कर देने से ही सब कुछ नहीं होगा। बच्चों के केवल विद्यालय आ जाने से ही वो शिक्षित नहीं होंगे। बालकों को शिक्षित करने के लिए चाहिए होंगे उच्च चारित्रिक विशेषताओं वाले ज्ञानवान शिक्षक। शिक्षक भी ऐसे जो विद्यालय केवल नौकरी करने नहीं आ रहे हैं। अपितु बच्चों का भविष्य सँवारने आ रहे हैं। यह प्रक्रिया बहुत मुश्किल है। शिक्षा के मार्ग में अत्यंत कठिनाईयाँ हैं। कभी बच्चों की उपस्थिति में उतार–चढ़ाव दिखेगा तो कभी नियमित विद्यार्थियों का प्रदर्शन शून्यप्राय दिखेगा। परन्तु इन सबसे शिक्षक को हारना नहीं है। अपने कर्म में शिथिलता नहीं लानी है। अपितु लक्ष्य प्राप्ति तक और जोश से जुट जाना है।

मिशन शिक्षण संवाद बनाने का उद्देश्य भी यही है कि किसी शिक्षक का हौंसला न टूटे। केवल शिक्षक को दोषी ठहराने वाले ही न हों अपितु अच्छे कार्यों के लिए उसका उत्साह बढ़ाने वाले भी हों। हो सकता है कि बलिया का कोई शिक्षक अपने विद्यालय में कम बच्चे आने से परेशान हो लेकिन सीतापुर के किसी शिक्षक की कहानी से वो प्रेरणा पा सकता है। हो सकता है कि रामपुर का कोई शिक्षक चाहरदीवारी न होने से फुलवारी न लगा पाने पर परेशान हो। लेकिन ऐसी ही परिस्थिति में बदायूँ की किसी शिक्षिका के प्रयोग उसकी समस्या का हल हो सकते हैं। मिशन शिक्षण संवाद ने ऐसा ही मंच बनने की कोशिश की है जो शिक्षकों को एक–दूसरे से प्रेरणा लेने के अवसर प्रदान करता है।

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका भी शिक्षकों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में किए गए ऐसे प्रयासों का ही संग्रह है। सदैव की भाँति उत्तम नवाचारों, नए टीएलएम, शैक्षिक लेखों से भरपूर पत्रिका का आगामी अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत है।

आपका

विमल कुमार

टीम मिशन शिक्षण संवाद

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति	7–11
मिशन गीत	12
अनमोल रत्न	13–14
निन्दक नियरे राखिए	15
टी.एल.एम.संसार	16
शिक्षण गतिविधि	17–18
प्रेरक–प्रसंग	19–20
सद्विचार	21
बाल साहित्य	22
बच्चों का कोना	23–25
कस्तूरबा विशेष	26
बात शिक्षिकाओं की	27
योग विशेष	28
खेल विशेष	29
बाल रत्न	30

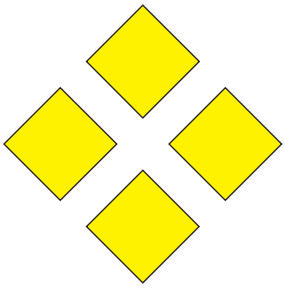

विचारशक्ति

वर्तमान परिपेक्ष्य में नैतिक शिक्षा की आवश्यकता

शिक्षण संवाद

आज के समय की भी कितनी अजीब विडंबना है। उसी का सर्वथा अभाव परिलक्षित होता है, जिसकी अत्यंत आवश्यकता है। इसी में एक अत्यंत जरूरी कड़ी से बच्चों को जोड़ने की परम आवश्यकता है, जिसका नाम है—नैतिक शिक्षा।

बच्चों के लिए प्राथमिक स्तर से ही नैतिक शिक्षा परम् आवश्यक है। इसे अनिवार्य विषय के रूप में प्राथमिकता से लिया जाना आवश्यक है। बच्चों में देखी जाने वाली अनुशासनहीनता तथा अन्य समस्याओं के कारणों में एक प्रमुख घटक नैतिक शिक्षा का अभाव है। जिसके ज्ञान से वो पूरी तरह अपरिचित है। परिषदीय विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के पारिवारिक वातावरण से हम लोग भली—भाँति परिचित हैं। हम लोग भी कार्य की अधिकता, पाठ्यक्रम की परिपूर्णता में संलिप्त रहते हुए इस ओर सर्वथा उदासीन रह जाते हैं।

मैंने अपने कक्षा शिक्षण में पाया कि इन बच्चों को शिक्षित करने से ज्यादा महत्वपूर्ण इन्हें योग्य इंसान बनाना है ताकि देश को शिक्षित ही नहीं अपितु एक योग्य नागरिक भी मिल सके। अपने शिक्षण के लंबे अनुभव के पश्चात ये देखा कि हम बच्चों की शिक्षा और नवाचार की तो बड़ी—बड़ी बातें करते हैं परन्तु नैतिक शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं दे पाते। हालाँकि प्रार्थना सभा में नैतिक मूल्यपरक शिक्षा और प्रेरक प्रसंग की बात कही गई है परंतु अन्य आवश्यक गतिविधियों के रहते नैतिक शिक्षा का क्रियान्वयन नियमित रूप से नहीं हो पाता है। इसके लिए एक आवश्यक अनिवार्य विषय की व्यवस्था की जानी चाहिए ताकि हम बच्चों में नैतिक मूल्यों का, अपने संस्कारों का अच्छी बातों का बीज बो सकें और यह बच्चे कल हमारे देश के योग्य नागरिक बन सकें।

मोना बनेजा,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय नेवरना,
विकास खण्ड—बिछिया,
जनपद—उन्नाव।

विचारशक्ति

काका कलाम मिसाइल मैन के रूप में वैज्ञानिक ही नहीं एक सच्चे कर्मयोगी थे

शिक्षण संवाद

'सपने वे नहीं होते, जो आपको रात में सोते समय नींद में आएं बल्कि सपने वे होते हैं, जो रात में सोने ही न दें।' ऐसी बुलंद सोच रखने वाले 'मिसाइलमैन' अबुल पाकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम (एपीजे अब्दुल कलाम) भारतीय मिसाइल प्रोग्राम के जनक कहे जाते हैं। जब कलाम ने देश के सर्वोच्च पद यानी 11वें राष्ट्रपति की शपथ ली थी तो देश के हर वैज्ञानिक का सर फख्र से ऊँचा हो गया था। वे 'मिसाइलमैन' और 'जनता के राष्ट्रपति' के रूप में लोकप्रिय हुए।

आइए नजर डालते हैं उनके जीवन सफर पर...

आसमान की ऊँचाइयों को छूने के लिए हवाई जहाज और अन्य साधनों से भी जरूरी चीज है हौंसला। हौंसला आपकी सोच को वह उड़ान देता है जिसका शिखर कामयाबी की चोटी पर है। कामयाबी के शिखर तक पहुँचने की आपने यूँ तो हजारों कहानियाँ पढ़ी होंगी लेकिन ऐसी ही एक जीती–जागती कहानी है पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति जिन्हें दुनिया 'मिसाइलमैन' के नाम से भी जानती है का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् (तमिलनाडु) में हुआ था। एपीजे अब्दुल कलाम का पूरा नाम डॉक्टर अबुल पाकिर जैनुलआब्दीन अब्दुल कलाम था।

कलाम अपने परिवार में काफी लाडले थे लेकिन उनका परिवार छोटी–बड़ी मुश्किलों से हमेशा ही जूझता रहता था। उन्हें बचपन में ही अपनी जिम्मेदारियों का एहसास हो गया था। उस वक्त उनके घर में बिजली नहीं हुआ करती थी और वे केरोसिन तेल का दीपक जलाकर पढ़ाई किया करते थे। अब्दुल कलाम मदरसे में पढ़ने के बाद सुबह रामेश्वरम् के रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर जाकर समाचार पत्र एकत्र करते थे। अब्दुल कलाम अखबार लेने के बाद रामेश्वरम् शहर की सड़कों पर दौड़–दौड़कर सबसे पहले उसका वितरण करते थे। बचपन में ही आत्मनिर्भर बनने की तरफ उनका यह पहला कदम रहा और मेरे शब्दों में उनके कर्मयोगी बनने की शुरुआत वहीं से हुई।

कलाम जब मात्र 19 वर्ष के थे तब द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका को भी उन्होंने महसूस किया। युद्ध की आग रामेश्वरम् के द्वार तक पहुँच गई थी। इन परिस्थितियों में भोजन सहित सभी आवश्यक वस्तुओं का अभाव हो गया था। लेकिन कलाम किसी भी विपरीत परिस्थिति के आगे झुके नहीं। कलाम एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी में आए तो इसके पीछे उनके 5वीं कक्षा के अध्यापक

सुब्रह्मण्यम अय्यर की प्रेरणा जरूर थी।

अध्यापक की बातों ने उन्हें जीवन के लिए एक मंजिल और उद्देश्य भी प्रदान किया। अभियांत्रिकी की शिक्षा के लिए उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में दाखिला लिया। वहाँ इन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में अध्ययन किया।

1962 में वे 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' में आए। डॉक्टर अब्दुल कलाम को प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एसएलवी तृतीय) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल है। अब्दुल कलाम भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक माने जाते हैं।

उन्होंने 20 साल तक भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन यानी इसरो में काम किया और करीब इतने ही साल तक रक्षा शोध और विकास संगठन यानी डीआरडीओ में भी। वे 10 साल तक डीआरडीओ के अध्यक्ष रहे। साथ ही उन्होंने रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार की भूमिका भी निभाई। इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसी मिसाइल्स को स्वदेशी तकनीक से बनाया था।

वह ऐसे विशिष्ट वैज्ञानिक थे जिन्हें 30 विश्वविद्यालयों और संस्थानों ने डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया था। उन्होंने अपने जीवन में अनेक अवार्ड्स प्राप्त किए जिसमें 1997 में देश के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता इंदिरा गांधी अवॉर्ड भी शामिल है। 18 जुलाई 2002 को कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एनडीए घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया था। 25 जुलाई 2002 को उन्होंने संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी।

काका कलाम के राष्ट्रपति रहते हुए जिन तीन किस्सों की चर्चा करने जा रहा हूँ वो कइयों के लिए प्रेरणा हो सकते हैं और आईना भी।

डॉ0 एपीजे अब्दुल कलाम सादगी, मितव्ययिता और ईमानदारी जैसे उन गुणों की मिसाल थे जो आज के राजनीतिक परिदृश्य में एकदम दुर्लभ हैं।

चंद्रगुप्त मौर्य के गुरू और प्रधानमंत्री चाणक्य एक झोपड़ी में रहते थे। एक दिन एक मेहमान उनसे मिलने पहुँचा। चाणक्य एक दिये की रोशनी में बैठे कुछ लिख रहे थे। मेहमान के पहुंचने पर उन्होंने वह दिया बुझा दिया और एक दूसरा दिया जलाकर मेहमान से बातचीत करने लगे। हैरत में आए मेहमान ने थोड़ी देर बाद इसका कारण पूछा। चाणक्य ने बताया कि पहले वाले दिये में तेल सरकारी खर्चे में से डाला गया था। उसकी रोशनी में वे सरकारी काम कर रहे थे। आगंतुक उनका

निजी मेहमान था इसलिए उन्होंने दूसरा दिया जला लिया जिसमें उनके पैसे से लाया गया तेल डाला गया था। संदेश यह था कि शासक को सरकारी और निजी खर्च में अंतर न सिर्फ समझना चाहिए बल्कि करना भी चाहिए।

सदियों पुराना यह किस्सा कितना सच है कितना नहीं कहना मुश्किल है। लेकिन एपीजे अब्दुल कलाम से जुड़े ऐसे कई किस्से लोगों की स्मृतियों में हैं। बहुत से लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने इन किस्सों को अपने सामने घटते देखा है। दरअसल आज के दौर में जब जनसेवकों का एक बड़ा वर्ग राजा जैसा व्यवहार करता दिखने लगा है, कलाम ने सादगी, मितव्ययिता और ईमानदारी की कई अनुकरणीय मिसालें छोड़ी हैं। ये प्रेरणा भी हो सकती हैं और आईना भी।

एक बार कलाम के कुछ रिश्तेदार उनसे मिलने राष्ट्रपति भवन आए। कुल 50–60 लोग थे। स्टेशन से सब को राष्ट्रपति भवन लाया गया जहाँ उनका कुछ दिन ठहरने का कार्यक्रम था। उनके आने–जाने और रहने–खाने का सारा खर्च कलाम ने अपनी जेब से दिया। संबंधित अधिकारियों को साफ निर्देश था कि इन मेहमानों के लिए राष्ट्रपति भवन की कारें इस्तेमाल नहीं की जाएँगी। यह भी कि रिश्तेदारों के राष्ट्रपति भवन में रहने और खाने–पीने के सारे खर्च का ब्यौरा अलग से रखा जाएगा और इसका भुगतान राष्ट्रपति के नहीं बल्कि कलाम के निजी खाते से होगा। एक हफ्ते में इन रिश्तेदारों पर हुआ तीन लाख चौवन हजार नौ सौ चौबीस रुपये का कुल खर्च देश के राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने अपनी जेब से भरा था।

इसी तरह एक बार कलाम आईआईटी (बीएचयू) के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि बनकर गए थे। वहाँ मंच पर जाकर उन्होंने देखा कि जो पाँच कुर्सियाँ रखी गई हैं उनमें बीच वाली कुर्सी का आकार बाकी चार से बड़ा है। यह कुर्सी राष्ट्रपति के लिए ही थी और यही इसके बाकी से बड़ा होने का कारण भी था। कलाम ने इस कुर्सी पर बैठने से मना कर दिया। उन्होंने वाइस चांसलर (वीसी) से उस कुर्सी पर बैठने का अनुरोध किया। वीसी भला ऐसा कैसे कर सकते थे? आम आदमी के राष्ट्रपति के लिए तुरंत दूसरी कुर्सी मँगाई गई जो साइज में बाकी कुर्सियों जैसी ही थी।

कलाम से जुड़ा तीसरा किस्सा तब का है जब राष्ट्रपति बनने के बाद वे पहली बार केरल गए थे। उनका ठहरना राजभवन में हुआ था। वहाँ उनके पास आने वाला सबसे पहला मेहमान कोई नेता या अधिकारी नहीं बल्कि सड़क पर बैठने वाला एक मोची और एक छोटे से होटल का मालिक था। एक वैज्ञानिक के तौर पर कलाम ने त्रिवेंद्रम में काफी समय बिताया था। इस मोची ने कई बार उनके जूते गाँठे थे और उस छोटे से होटल में कलाम ने कई बार खाना खाया था।

25 जुलाई 2007 को उनका कार्यकाल समाप्त हो गया था। अपना कार्यकाल पूरा करके कलाम जब राष्ट्रपति भवन से जा रहे थे तो उनसे विदाई संदेश देने के लिए कहा गया। उनका कहना था, 'विदाई कैसी, मैं अब भी एक अरब देशवासियों के साथ हूँ।'

ऐसे भारतीय मिसाइल प्रोग्राम के जनक और जनता के राष्ट्रपति के रूप में लोकप्रिय हुए पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 एपीजे अब्दुल कलाम का 27 जुलाई 2015 को शिलांग के आईआईएम में एक व्याख्यान देने के दौरान गिरने के बाद निधन हो गया। एक कर्मयोगी के रूप में अंतिम समय में भी वो व्याख्यान ही दे रहे थे। इसीलिए मेरी नजरों में वो मिसाइल मैन के साथ साथ सच्चे कर्मयोगी भी थे। आज कलाम नहीं हैं। फिर भी वे एक अरब देशवासियों के साथ हैं। उनके ये किस्से आज भी कइयों को प्रेरणा देने का काम कर रहे हैं।

दीपनारायण मिश्र,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय रामपुर धमावां,
विकास खण्ड–सिराथू,
जनपद–कौशाम्बी।

मिशन शिक्षण संवाद

अगर गुनगुनाये कोई गीत,
तो जीवन में बहार आ जाए,
अगर गुनें कोई गीत,
तो मिशन में प्राण आ जाए।
गुनगुनाओ गीत ऐसा,
जो जीवन मिशन बन जाए,
हो मिशन ऐसा,
जो कर्म, सुन्दर जहाँ बनाये।
अगर है मिशन, शिक्षा को अर्पित,
शिक्षा–जगत में क्रान्ति आ जाए,
तब न रहेगी कोई भ्रांति,
ये जहाँ स्वर्ग सा बन जाए।
मिशन शिक्षण संवाद का है यही प्रयास,
बच्चा– बच्चा शिक्षित हो जाए,
नित नये– नये प्रयासों से,
मिशन शिक्षण संवाद, शिखर पर छा जाए।।

अर्चना गुप्ता,
प्रभारी अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय सिजौरा,
विकास खण्ड–बंगरा,
जनपद–झाँसी।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

नमिता पंत (स०अ०) राजकीय प्राथमिक विद्यालय जसपुर खुर्द, ब्लॉक – काशीपुर, उधम सिंह नगर, उत्तराखंड

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_916.html

ज्योत्सना सिंह, पू०मा०वि० कशिया ब्लाक – मूरतगंज, जनपद –कौशाम्बी उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_100.html

पवन कुमार सिंह शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय, पोटिया, विकासखंड : धमधा, जिला : दुर्ग, छत्तीसगढ़

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_589.html

अशोक कुमार साहू शासकीय प्राथमिक शाला सगनी, विकास खण्ड – धमधा, जिला – दुर्ग, छत्तीसगढ़

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_627.html

राहुल देव, पूर्व माध्यमिक विद्यालय रायपुर, निघासन, जनपद– लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश

दिव्या पूरी प्रा० विद्यालय पल्टा, चिलकहर जनपद– बलिया, राज्य – उ०प्र०

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/08/blog-post_244.html

अर्पण कुमार आर्य (सहायक अध्यापक) पूर्व माध्यमिक विद्यालय लावाखेड़ा तालिब हुसैन, विकास क्षेत्र– नवाबगंज, जनपद– बरेली

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/09/blog-post_7.html

अनिता श्रीवास्तव, अंग्रेजी माध्यम प्राथमिक विद्यालय सरैया, ब्लाक– चरगावां, जनपद–गोरखपुर

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/09/blog-post_76.html

जितेन्द्र सिंह 【स.अ】 पू०मा० विद्यालय फैजनगर ब्लॉक – भुता, जनपद – बरेली राज्य – उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/09/blog-post_56.html

छाया पाण्डेय (प्र०अ०) प्रा०वि० छतमी, डीघ, भदोही उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/09/a.html

हरीश चंद्र तिवारी (इ०अ०) संविलियन विद्यालय पसियापुरा ब्लॉक – भगतपुर टांडा, जनपद – मुरादाबाद, राज्य – उत्तर प्रदेश

https://shikshansamvad.blogspot.com/2020/09/blog-post_87.html

निन्दक नियरे राखिए

इस समाज में हम लोग विभिन्न प्रकार के कार्य करते हैं। कार्यों को करने में त्रुटियाँ भी होती हैं, अनुभव भी मिलते हैं और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी मिलती है।

पर कभी विचार किया है कि यदि आप कोई कार्य बड़े लगन से करें और उसके बाद आपके कार्य पर कोई कमी बताने लगे तो आपको बहुत बुरा लगता है, वास्तव में बुरा लगने वाली बात भी है कि इतनी मेहनत और तन्मयता से कार्य किया गया और सामने वाले ने दो शब्द कह करके आप की कमी को बता दिया। लेकिन इसका दूसरा पहलू भी है कि यदि आप कोई कार्य कर रहे हैं और किसी ने आपकी कमी या आपकी गलती को बताया तो आप उसे सुधारने का प्रयास करते हैं और आप द्वारा किया गया कार्य पहले की अपेक्षा काफी अच्छा हो जाता है। इस प्रकार से आलोचना के माध्यम से ही सही लेकिन उसने हमारी सहायता ही की है क्योंकि यदि हमें हमारी कमी बताई नहीं जाती तो हम महसूस नहीं कर पाते कि हम क्या गलत कर रहे हैं और यथावत कार्य करते रहते हैं और हमारी गलती की पुनरावृति लगातार होती रहती है जिससे जो वांछित सफलता होती है वह शतप्रतिशत प्राप्त नहीं हो पाती।

आज के परिवेश में हम सभी लोग यह पाते हैं कि यदि आपके कार्य की सराहना कर दी गई तो आप उस व्यक्ति को बहुत अच्छा कहते हैं।

यदि किसी ने आप के कार्य की आलोचना कर दी तो कहीं ना कहीं आपके हृदय में उसके प्रति कटुता का कुछ भाव आ जाता है।

जबकि वास्तव में हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। यदि आप कोई कार्य कर रहे हैं और कुछ लोग उसकी आलोचना कर रहे हैं अथवा उसमें कमियाँ गिना रहे हैं तो आपको धैर्यपूर्वक उनकी आलोचनाओं तथा कमियों पर विचार करना चाहिए कि वास्तव में उनके द्वारा बताया गया तथ्य सुधार योग्य है क्या और यदि सुधार योग्य है तो उसे सुधार करना चाहिए। हमें आलोचकों को भी सम्मान देना चाहिए क्योंकि आलोचक ही हमारे किए गए कार्य, रचना को बेहतरीन बनाने में हमारी मदद करता है।

आपने अपने घरों पर घास के पौधों को देखा होगा यदि माली या आप उस घास को नियमित काटकर एक अच्छा रूप देते रहते हैं तो आपके घर की शोभा में चार चाँद लग जाते हैं परंतु यदि उस घास को बिल्कुल भी स्पर्श ना किया जाए और ना ही उसकी काट छाँट की जाए तो वही घास आपके घर की शोभा को नष्ट भी कर देती है। इसका आशय यह है की हमें अपने कार्यों की निगरानी अवश्य कर आनी चाहिए जिससे कि हमारे कार्य शोभायमान हों और कोई सजावट या हमारे कृत्य को खराब ना कर दें इसलिए जो कहावत कही जाती है निंदक नियरे राखिए आंगन कुटी छबाय वास्तविक जीवन में नितांत आवश्यक है।

ओम प्रकाश श्रीवास्तव ओम,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय उदयापुर,
विकास खण्ड–भीतरगाँव,
जनपद–कानपुर नगर।

यातायात के नियम /सड़क सुरक्षा

विषय– सामाजिक विषय (हमारा परिवेश)

कक्षा – प्राथमिक स्तर (कक्षा – 3, 4, 5)

निर्माण सामग्री – चार्ट पेपर, स्केच पेन आदि।

लर्निंग आउटकम – –बच्चे यातायात के नियमों के बारे में जानते हैं और दैनिक जीवन में इनका प्रयोग कर लेते हैं।

परिचय एवं प्रयोग विधि –

सड़क पर वाहनों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। सड़क पर बढ़ती भीड़ और यातायात के नियमों का पालन न होने के कारण दुर्घटनाएँ होने लगी हैं जिससे जान–माल की क्षति होती है।

सड़क पर चलते समय हमें क्या क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए और किन नियमों का पालन करना चाहिए। इसकी जानकारी देने के लिए इन टी० एल० एम० का प्रयोग किया जा सकता है। चार्ट के इन चित्रों को दिखाकर बच्चों को सड़क, सुरक्षा और यातायात के नियमों के बारे में रोचकता से जानकारी दी जा सकती है।

कक्षा– कक्ष में इन चित्रों को लगा दिया जाता है। बच्चे प्रतिदिन इनको देखकर , आपस में बातचीत के द्वारा यातायात के नियमों के जान लेते हैं और दैनिक जीवन में इनका प्रयोग करने लगते हैं।

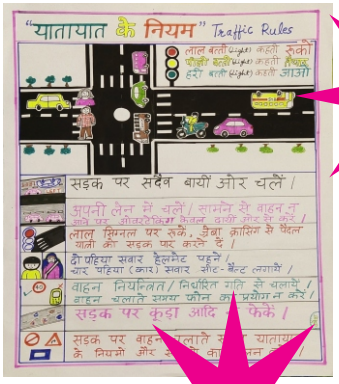

उमेश गिरि गोस्वामी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय पिपरिया मंडन
विकास क्षेत्र– बरखेड़ा
जिला– पीलीभीत, उत्तर प्रदेश

शिक्षण गतिविधि

गतिविधि आधारित शिक्षा

शिक्षण संवाद

देखा जाए तो गतिविधि आधारित शिक्षा प्राथमिक कक्षाओं में अधिक उपयोगी साबित होती है। हम इन गतिविधियों की मदद से शिक्षण को अधिक रोचक बना सकते हैं। विशेषज्ञों की माने तो गतिविधियाँ छात्रों में एक्टिवनेस और स्मार्टनेस लाती हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षण छात्र केंद्रित शिक्षण पद्धति है। यह बच्चों की इंद्रियों को उत्तेजित कर स्मेल, विजन, फीलिंग और व्यवहारिक गतिविधियों में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसमें बच्चों का काम केवल नोट्स लेकर पढ़ने और सुनने का नहीं होता, बल्कि उन्हें कई अलग–अलग एक्टिविटीज के जरिए पढ़ाया और सिखाया जाता है। इसका मकसद छात्रों को विविध ज्ञान और अनुभव प्रदान कराना है जिससे उनके ज्ञान, कौशल और मूल्यों का निर्माण होता है।

बच्चों को सीखने के अनुभव का आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित करने के अलावा गतिविधि आधारित शिक्षा के कई फायदे हैं, जिनके बारे में हम यहाँ जानेंगे।

1)छात्रों को जानकारी याद रखने में मदद करना–

गतिविधि आधारित शिक्षा बच्चों को शारीरिक और मानसिक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस प्रक्रिया में खुद को शामिल करके छात्र कई चीजों को लंबे समय तक याद रख सकते हैं।

2)जिज्ञासा और सोच विकसित करने में गतिविधि आधारित शिक्षा के लाभ–

यह शिक्षण पद्धति बच्चों को नए अनुभवों की तलाश करने, सीखने में रूचि पैदा करने, उनकी शब्दावली को मजबूत करने और नई किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। इन कामों से छात्रों में जिज्ञासा और आलोचनात्मक सोच बढ़ती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह बच्चों को स्वयं के अनुभव से समझने और सीखने में उन्हें सक्षम बनाती है।

3) गतिविधि आधारित शिक्षा बच्चों को स्वतंत्र और जिज्ञासु बनाती है–

गतिविधि आधारित शिक्षा की मदद से बच्चे स्वतंत्र और जिज्ञासु बनते हैं। यह पूरी तरह इंडिपेंडेट इनवेस्टीगेशन और एनालिसिस पर आधारित है। इस प्रक्रिया में यदि बच्चे ग्रुप्स में रहकर काम करते हैं तो यह शिक्षण पद्धति छात्रों को स्वतंत्र रूप से जिज्ञासु होने, गंभीर रूप से सोचने और स्वयं के अनुभव से सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है।

4)वास्तविक जीवन से जोड़ती है गतिविधि आधारित शिक्षा–

गतिविधि आधारित शिक्षा छात्रों को उनके जीवन से करीब से जोड़ती है। इसके जरिए बच्चे हर मुश्किल सवाल का जवाब खुद हल करना सीख जाते हैं, जो उनके जीवन को आसान बनाने के लिए बहुत जरूरी है।

5)सामाजिक विकास का समर्थन करती है –

गतिविधियों के माध्यम से बच्चे टीम वर्क सीखते हैं और उनमें सामाजिक कौशल विकसित होता है। ये कौशल

स्कूल के बाद भविष्य में उनके करियर और सामाजिक जीवन में बहुत काम आता है।

6)समस्याओं को हल करने में फायदेमंद–

गतिविधि आधारित शिक्षा बच्चों को यथार्थवादी समस्याओं और परिदृश्यों का पता लगाने और उन्हें हल करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इससे बच्चों को वास्तविक जीवन की प्रासंगिकता को समझने में मदद मिलती है।

7) गतिविधि आधारित शिक्षा से बच्चे खुद को करते हैं व्यक्त–

इस शिक्षण की मदद से बच्चों को खुद को अलग–अलग तरह से व्यक्त करने का मौका मिलता है। यह बच्चों को अपनी नॉलेज को रचनात्मक तरीके से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके अलावा इससे छात्र सीखने की विधि भी जान सकते हैं।

8)वास्तविक वस्तुओं के माध्यम से–

किताबों से सीखने के बजाए बच्चों को अगर वास्तविक वस्तुओं के जरिए सिखाया जाता है तो साइंस के लेसन्स काफी आसान और दिलचस्प हो जाते हैं। सबसे अच्छी बात ये है कि इसके लिए शिक्षक और छात्र दोनों की ओर से प्रयास किए जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर जैसे टीचर छात्रों को पौधों के बारे में पढ़ा रही है तो इस दौरान वह छात्रों को पौधों की कुछ किस्मों को एकत्रित करने के लिए कह सकती है और फिर इससे छात्रों को पढ़ाया जा सकता है। अगर बात मैथ्स सब्जेक्ट की है तो छात्रों को फल खरीदना या बेचना सिखाने के लिए असली सेब और आम लाने के लिए कहा जा सकता है। बता दें कि बच्चे देखकर और खुद उस चीज का अनुभव करके ही बहुत जल्दी सीख सकते हैं।

9)क्लासरूम थीम

क्लास में एक ही सीट पर बैठकर पढ़ने से बच्चे अक्सर बोर हो जाते हैं, ऐसे में उनकी पद्धति में बदलाव लाकर विषयों के प्रति उनमें रूचि जगाई जा सकती है। उदाहरण के तौर पर अगर टीचर अंतरिक्ष के बारे में पढ़ा रहे हैं तो उनसे स्पेस थीम पर क्लास को डेकोरेट करवा सकते हैं। यह काफी रोमांचक होगा।

10)पॉवर ऑफ प्रोजेक्टस–

पॉवर ऑफ प्रोजेक्ट्स से मतलब है प्रोजेक्टस की असली छवि से। पैरेंट्स और टीचर बच्चों को प्रोजेक्टस बनाने में उनकी मदद कर सकते हैं लेकिन इससे पहले छात्रों को प्रोजेक्ट के टॉपिक से परीचित होना जरूरी है। जैसे अगर कोई बच्चा खेत को लेकर प्रोजेक्ट बना रहा है तो बेहतर है कि पहले एक बार उसको खेत विजिट करा दिया जाए। ऐसे और भी कई उदाहरण हैं जिस पर प्रोजेक्ट बनाने से पहले बच्चे उसकी छवि को देख लें। इससे छात्र उबाऊ और बोझिल होकर नहीं बल्कि उत्साहपूर्वक होकर सीखते हैं।

संगीता भास्कर,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय बिस्तौली,
विकास खण्ड–जंगल कौड़ियां,
जनपद–गोरखपुर।

प्रेरक प्रसंग

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन

शिक्षण संवाद

हर साल 5 सितम्बर को देश में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। यह दिन डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के सम्मान में मनाया जाता है।

हमारे देश के दूसरे राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी का जन्म 5 सितम्बर 1888 को मद्रास से 40 मील दूर छोटे से कस्बे तिरुतनी में हुआ था। वह एक महान शिक्षक, दार्शनिक व विद्वान थे।

वैसे तो उनका पूरा जीवन ही प्रेरणादायक है, लेकिन उनके जीवन से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग हमें बहुत कुछ सीख देते हैं। जब डॉ० राधाकृष्णन भारत के राष्ट्रपति बने तो उनके कुछ छात्रों ने उनका जन्मदिन मनाना चाहा तो उन्होंने कहा कि, "मेरा जन्मदिन मनाने की बजाय अगर 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाए तो यह मेरे लिए गर्व की बात होगी।" तभी से उनके सम्मान में हर वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने यह घोषणा की कि सप्ताह में दो दिन कोई भी व्यक्ति उनसे बिना पूर्व अनुमति के मिल सकता है। इस प्रकार उन्होंने राष्ट्रपति भवन को आम लोगों के लिए भी खोल दिया।

इस प्रसंग से डॉ० राधाकृष्णन जी के सरल, सहज व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है। मनुष्य को ऊँचाई पर पहुँचने के बाद भी सरलता और सहजता नहीं छोड़नी चाहिए। यह एक महान व्यक्तित्व की पहचान है।

विनीत शर्मा,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय केशोराय,
विकास खण्ड–टूंडला,
जनपद–फिरोजाबाद।

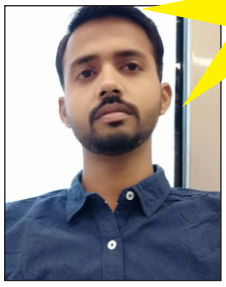

प्रेरक प्रसंग

लाल बहादुर शास्त्री

शिक्षण संवाद

''स्वतंत्रता का संरक्षण केवल सैनिकों का कार्य नहीं है, इसके लिए पूरे देश को मजबूत होना होगा।'' ऐसे विचार रखने वाले लाल बहादुर शास्त्री जी भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री थे। शास्त्री जी एक ऐसे प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने अपने शासनकाल में स्वजनों की, स्वजातियों और सगे– सम्बन्धियों की अपेक्षा करके सत्य की रक्षा की। 17–18 वर्षों तक उच्च पदों पर रहते हुए भी शास्त्री जी ने सदैव सत्यनिष्ठा और ईमानदारी के पथ का अनुसरण किया। शास्त्री जी के जीवन की कुछ घटनाएँ ऐसी हैं जो शास्त्री जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व को प्रकाशित करती हैं।

बात तब की है जब शास्त्री जी स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान जेल में थे। घर पर उनकी बेटी की हालत बहुत खराब थी। उनके साथियों ने उन्हें जेल से बाहर आकर पुत्री को देखने का आग्रह किया। परन्तु शास्त्री जी ने पैरोल पर छूटकर जेल से बाहर आना नहीं स्वीकार किया। उन्हें यह लिखकर देना पड़ता कि जेल से बाहर आकर वे आन्दोलन में कोई कार्य नहीं करेंगे। यह उन्हें आत्मसम्मान के विरुद्ध लगा। अन्त में मजिस्ट्रेट को 15 दिनों के लिए बिना शर्त उन्हें छोड़ना पड़ा। वे जब घर पहुँचे तो ईश्वर को कुछ और मंजूर था, उसी दिन उनकी बेटी ने अन्तिम साँस ली। शास्त्री जी ने कहा ''मैं जिस काम के लिए आया था, वह पूरा हो गया। अब मुझे जेल वापस जाना चाहिए।'' शास्त्री जी एक पल भी न रुके और तुरन्त वापस जेल आ गये। यह घटना शास्त्री जी के उस अपार प्रेम की व्याख्या करती है, जो शास्त्री जी अपने देश से करते थे।

एक और प्रेरणादायी प्रेरक प्रसंग है, जब शास्त्री जी प्रधानमंत्री के पद पर सुशोभित थे। शास्त्री जी कपड़े की एक मिल देखने गये। साथ में मिल का मालिक तथा अन्य उच्चाधिकारी भी साथ थे। कपड़े की मिल देखने के बाद शास्त्री जी ने कुछ साड़ी दिखाने के लिए कहा। मालिक उन्हें बहुत महँगी– महँगी साड़ियाँ दिखाने लगा। शास्त्री जी ने कहा मै इतनी महँगी साड़ी नहीं खरीद सकता, मुझे कम मूल्य की साड़ी दिखाएँ। शास्त्री जी की बात सुनकर मालिक बोला– "आप प्रधानमंत्री हैं, आपको पैसे देने की क्या जरूरत? और ये कपड़े तो मैं आपको भेंट स्वरूप दे रहा हूँ।"

शास्त्री जी ने कहा– "मैं प्रधानमंत्री देश का हूँ, देश की सेवा मेरा धर्म है। मैं देश के पैसों का उपयोग स्वयं के निजी जीवन के लिए कभी नहीं कर सकता। यह देशद्रोह होगा। यह प्रेरक प्रसंग शास्त्री जी का राष्ट्र के प्रति प्रेम को दर्शाता है और उनकी ईमानदारी को बताता है।"

2 अक्टूबर शास्त्री जी का जन्मदिवस है, इस दिन को हम बहुत उत्साह के साथ मनाते हैं। उनके द्वारा किये गये कार्य एवं प्रयासों को हम भारतवासी आज भी स्मरण करते हैं और उनके आदर्शों को अपनाते हुए उन्हें शत– शत् नमन करते हैं।

अनुप्रिया यादव,
सहायक अध्यापिका,
कम्पोजिट विद्यालय काजीखेड़ा,
विकास खण्ड–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

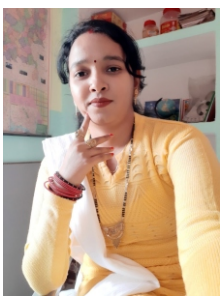

सरदार वल्लभ भाई पटेल जी के विचार काव्य रूप में

देश की साँसों में है बसती सुरभि एक इंसान की,
आओ सोच को जानें समझें वल्लभ भाई महान की।
आधुनिक भारत के शिल्पी लौह पुरुष सरदार थे,
बने प्रेरणा स्रोत युवा के उनके श्रेष्ठ विचार थे।
स्वीकारो निज दोष को आगे तभी बढ़ोगे,
जानोगे जब गलतियाँ उन्हें दूर भी करोगे।
शक्ति साथ विश्वास भी साथी दोनों नेक,
करना कार्य महान जो, लो दोनों की टेक।
अंदर अपने बचपना सदा बनाए रखना,
चिंता पास न आए सच करना जो सपना।
ज्यादा अच्छाई बने बाधक मार्ग विकास,
क्रोध भरो आँखों में मजबूत हों हाथ।
शक्ति बिन श्रद्धा व्यर्थ है एक दूजे का मान,
दोनों संग–संग जब चलें कार्य करें महान।
जाति पंथ ऊँच नीच के भेद करें हम खत्म,
उन्नत हो अपनी संस्कृति प्रेम भाव से युक्त।
चालक जो तलवार का रखे फिर भी म्यान,
सच्चा अहिंसावादी वह इतना लो तुम जान।
इच्छा वल्लभ भाई की उत्पादक हो देश,
भूखा न कोई रहे आगे बढ़े स्वदेश।

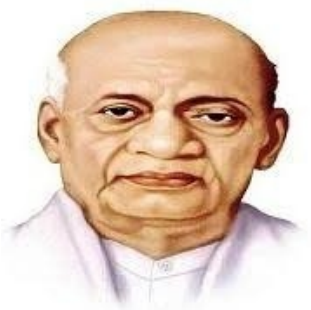

सीमा मिश्रा,
सहायक अध्यापिका,
कंपोजिट विद्यालय काजीखेड़ा,
विकास खण्ड–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

बुलबुल और मुन्नू

शिक्षण संवाद

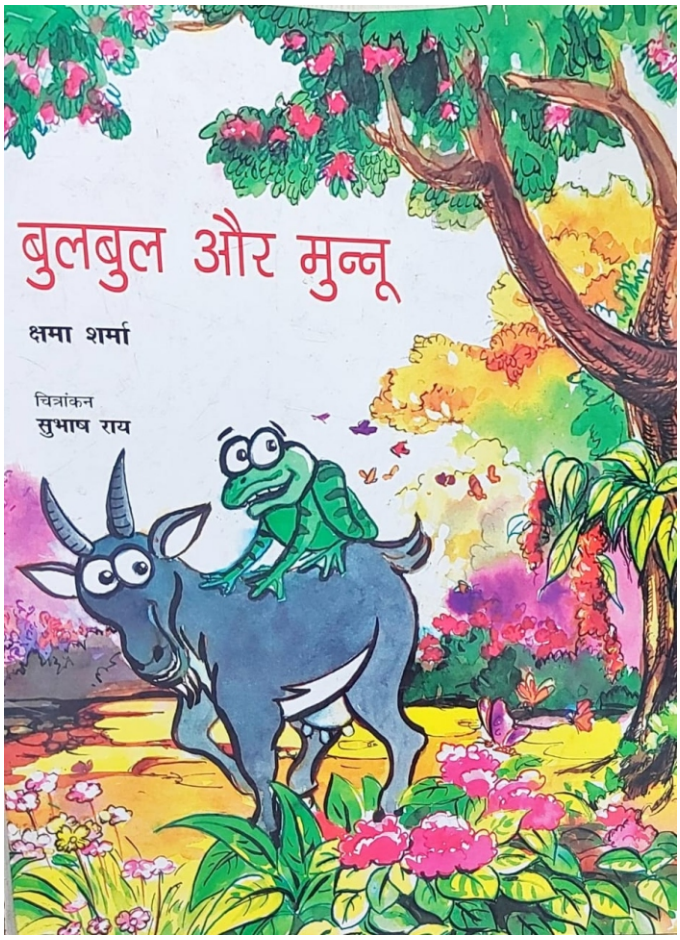

बुलबुल और मुन्नू दो बाल कहानियों का एक छोटा–सा संग्रह है। इन कहानियों को रचा है जानी–मानी बाल साहित्यकार क्षमा शर्मा ने। पहली कहानी बुलबुल नाम की बकरी और मुन्नू नाम के मेंढक की है। मुन्नू के सहारे लेखिका ने एक ऐसा व्यक्तित्व गढ़ा है जो हर काम करना चाहता है। सब कुछ सीखना चाहता है। लेकिन किसी विद्या को सीखने के लिए जो परिश्रम, धैर्य और लगन की आवश्यकता होती है उसका मुन्नू में घोर अभाव है। कभी मुन्नू गाना सीखना चाहता है तो कभी पेड़ों पर कूदना। इस सीखने–सिखाने में कई बार उसे मुँह की खानी पड़ती है। लेकिन बुलबुल जैसी मित्र भी मिलती है जो उसका ध्यान रखती है और समझाती रहती है। एक बार जब मुन्नू मुसीबत में फँस जाता है तो वो उसकी सहायता के लिए एक कार का रास्ता रोककर खड़ी हो जाती है। मेहनत और मित्रता की बातों से भरपूर देती ये कहानी बच्चों के लिए अत्यंत शिक्षाप्रद है। संग्रह की दूसरी कहानी भानु चाचा की है जो विज्ञान की अच्छी जानकारी रखते हैं। वो बच्चों के प्रिय हैं क्योंकि नयी–नयी जानकारियाँ देकर वो बच्चों की जिज्ञासा को शांत करते हैं। इस कहानी के जरिए लेखिका ने अंतरिक्ष से सम्बंधित कुछ तथ्यों को बड़ी ही सहजता से बाल पाठकों तक पहुँचाया है। तो ज्ञान और मनोरंजन से भरी इस पुस्तक को आप अपने पुस्तकालय में सम्मिलित कर रहे हैं न?

हम छोटे–छोटे बच्चे हैं

किरण जोशी,
प्रधानाध्यापक,
राजकीय प्राथमिक विद्यालय मैखण्डी मल्ली,
संकुल – सेमला,
विकास खण्ड – कीर्ति नगर,
जनपद – टिहरी गढ़वाल,
उत्तराखण्ड।

हम छोटे–छोटे बच्चे हैं
और प्यारे प्यारे हैं।
पर नादान समझकर
हमको यूँ बहलाते रहते हैं।
अपने घर पर हमको
कुछ मासूम समझते हैं।
पर विद्यालय आकर
हम एक हो जाते हैं।
कोई फूलों में पानी डाले
कोई कमरों को ठीक करे।
बाल सरकार की जिम्मेदारी
सब प्यार से वहन करें।
हम छोटे–छोटे बच्चे हैं – – – – –
तुम स्वस्थ रहो हर दम
गुरुजन ये सिखाते हैं।
स्वच्छ रहकर योग करो
प्रातः योग कराते हैं।
फिर सुविचार सुनें और
कहानी सुनें तब चिंतन मनन करें।
पढ़ लिखकर नये सपने लेकर
विद्यालय से घर को चलें।
हम छोटे–छोटे बच्चे हैं
और प्यारे–प्यारे हैं।
पर नादान नहीं अब नये बड़े
काम करने वाले हैं।

मेरी प्यारी नानी माँ

मेरी प्यारी नानी माँ
मेरी प्यारी नानी माँ,
प्यारी–प्यारी नानी माँ।
प्यारी–प्यारी नानी माँ,
मैं हूँ तेरी नानी माँ।
क्यों तो धूप निकलती है?
हवा यह कैसे चलती है?
कैसे बर्फ पिघलती है?
क्यों तो धरती हिलती है?
मुझे बताओ नानी माँ,
मेरी प्यारी नानी माँ।
आता सूरज धूप निकलती,
वायुदाब से हवा है चलती।
बढ़े ताप तो बर्फ पिघलती,
है भूकंप से धरती हिलती।
तुझे बताती नानी माँ,
तेरी प्यारी नानी माँ।
पेड़ क्यों मित्र हमारे हैं?
ये तारे कितने सारे हैं?
फूल क्यों न्यारे–न्यारे हैं?
क्यों बच्चे सब को प्यारे हैं?
मुझे बताओ नानी माँ,
मेरी प्यारी नानी माँ।
पेड़ से चलती साँसें हमारीं,
तारों को गिनना दुश्वारी।
वर्णक से छवि फूल की न्यारी,
बच्चों की हैं बातें प्यारी।
तुझे बताती नानी माँ,
तेरी प्यारी नानी माँ।
क्या यह दुनिया गोल है?
पानी क्यों अनमोल है?
किससे बना यह ढोल है?
कैसे खुलती झूठ की पोल है?
मुझे बताओ नानी माँ,
मेरी प्यारी नानी माँ।
हाँ! यह दुनिया गोल है,
जीवन देता पानी यह अनमोल है।
लकड़ी खाल से बना यह ढोल है,
सच से खुलती झूठ की पोल है।
तुझे बताती नानी माँ,
तेरी प्यारी नानी माँ।

राजबाला धैर्य,
सहायक अध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय बिरिया नारायणपुर,
विकास खण्ड–क्यारा,
जनपद–बरेली।

बच्चों का कोना

लालू को मिली सीख

शिक्षण संवाद

लालू और कालू दो चूजे थे। दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे। कालू शान्त और हमेशा अपनी माँ का कहना मानने वाला चूजा था पर वहीं लालू बहुत शरारती था और अपनी माँ का कहना भी नहीं मानता था। एक दिन जब दोनों की माँ दाना लेने गयीं तो हमेशा की तरह दोनों को समझाकर गयीं "जब तक हम वापस न आ जाएँ तुम घोंसलों से बाहर मत निकलना, तुम्हें अभी सही से उड़ना नही आता।"

यह कर वे उड़ गयीं पर लालू कहाँ मानने वाला था। वह माँ के आँखों से ओझल होते ही अपने घोंसले से बाहर निकल कर खेलने लगा।

कालू जो अपने घोंसले में बैठा सब देख रहा था उसने लालू से बहुत कहा कि अपने घोंसले में जाओ, माँ ने बाहर निकलने से मना किया है।

पर लालू ने कालू की एक न सुनी और खेलने में मस्त रहा। तभी एक साँप की नजर लालू पर पड़ी और वह लालू को पकड़ने दौड़ा। साँप को अपनी तरफ आता देख लालू घबरा गया और चीं–चीं करने लगा। कालू भी यह देखकर घबरा गया पर फिर उसने अपने दोस्त को बचाने का एक उपाय सोचा। वह अपने घोंसले से बाहर निकला और साँप की पूँछ की तरफ पहुँचकर अपनी चोंच से मारना शुरु कर दिया। साँप ने अपना मुँह कालू की तरफ घुमाया। यह देखकर लालू को सब समझ आ गया और अब उसने साँप की पूँछ की तरफ वार कर दिया। इस तरह दोनों चूजे साँप से लड़ने लगे। दो चूजों से घिरा होने के कारण साँप जल्दी ही थक गया और सरपट दौड़ता हुआ अपने बिल में घुस गया। तब तक दोनों की माँ भी वापस आ गई। दोनों ने अपनी–अपनी माँ को देखकर चैन की साँस लीं और सारी घटना कह सुनायी। साथ ही लालू ने अपनी माँ से माफी माँगते हुए वादा किया कि वह अब हमेशा उनका कहना मानेगा।

शिक्षाः– हमें हमेशा अपने माता–पिता का कहना मानना चाहिए।

अरुणा कुमारी राजपूत,
सहायक अध्यापिका,
आदर्श अंग्रेजी माध्यम संविलयन विद्यालय राजपुर,
विकास खण्ड सिम्भावली,
जनपद– हापुड़

कस्तूरबा विशेष

शिक्षण संवाद

बालिका शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हुये कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय जो भारत सरकार की एक अति महत्त्वाकांक्षी योजना है, अब नवीन तकनीक से आच्छादित होकर शिक्षा के विभिन्न आयाम स्थापित कर रही है। अति पिछड़े व अपवंचित वर्ग से जुड़ी बालिकाओं के लिये वरदानस्वरूप के०जी०बी०वी० सूचना व संचार तकनीक के प्रयोग से और अधिक समृद्ध हुये हैं। सुविधाओं मे उत्तरोत्तर वृद्धि के साथ ही शिक्षण की नवीन तकनीकों का प्रयोग निरंतर हो रहा है। कोरोना महामारी के संक्रमण के संकटकाल में ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन, दीक्षा प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा नवीन शिक्षण विधियों व नवाचारों का ज्ञान प्राप्त करना, नेवर इनरोल्ड व ड्रॉपआउट बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने के लिये नवीन कार्य योजना बनाना, आकलन व सतत मूल्यांकन का सही स्वरूप समझना आदि ने कस्तूरबा विद्यालयों को प्रगति का नया कलेवर प्रदान किया है।

के०जी०बी०वी में अपनी शिक्षिकाओं के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करती बालिकाओं को एक ओर तो पारिवारिक स्नेह की तरल अनुभूति द्रवित करती है तो शिक्षण विधियों मे दृश्य श्रव्य यंत्रों, शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग, नवाचार व विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ उन्हें रोमांचित करती हैं। भौतिक परिवेश मे चित्ताकर्षक परिवर्तन से युक्त नवीन कलेवर से सुसज्जित विद्यालय वातावरण को शैक्षिक सौंदर्य का मनोरम प्रतिरूप बन गये हैं। शिक्षा के साथ–साथ खेल व अन्य जीवनोपयोगी गतिविधियाँ जैसे जूडो कराटे प्रशिक्षण, सिलाई प्रशिक्षण, थियेटर कार्यशाला, स्काउट गाइड कैंप, मीना मंच, आरोहिणी बैठक, सांस्कृतिक व अन्य प्रतियोगिताओं मे प्रतिभागी बालिकाओं को प्रफुल्लित व उत्साहित के साथ आत्मनिर्भर बनाता है और आत्मरक्षा में दक्षता प्रदान करता है।

भारत सरकार व राज्य सरकार की संयुक्त नीति के अनुसार के०जी०बी०वी० विद्यालयों को उच्चीकृत किया जा रहा है जिससे बालिका शिक्षा के महान लक्ष्य का मार्ग अवरुद्ध न हो सके। बालिकायें किसी भी विवशता से हार मानकर कक्षा ८ के बाद शिक्षा से विमुख न हो जाएँ इसी को दृष्टिगत रखते हुये अधिकांश के०जी०बी०वी० में छात्रावास के नवीन भवन व कक्षाओं का निर्माण कराया जा रहा है जो इन बालिकाओं के लिये आशा व उत्साह का प्रकाशपुँज बन कर उनके भविष्य का उज्ज्वल पथ प्रशस्त करेगा। नवीन तकनीक का प्रयोग के०जी०बी०वी० के लिये शैक्षिक रूप से और अधिक उन्नत व समृद्ध बनायेगा और भारत की भावी नारी शक्ति में असीम ऊर्जा व उत्साह का संचार होगा ऐसी हम सभी की हार्दिक अभिलाषा है।

किरणबाला,
फुलटाइम शिक्षिका–हिन्दी,
कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय शाहबाद,
जनपद–रामपुर।

बात शिक्षिकाओं की

एक महिला शिक्षिका की डायरी से

शिक्षण संवाद

शिक्षक समाज की धुरी होते हैं,चाहे वे महिला हों या पुरुष। एक अच्छा व योग्य शिक्षक समाज के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान देता है। महिला शिक्षकों ने भी समाज के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। किसी भी क्षेत्र में महिला शिक्षक पुरुष शिक्षकों की अपेक्षा कम नहीं हैं। वर्तमान समय में महिला शिक्षकों की संख्या बहुत अधिक है। महिला शिक्षिकाएँ अपने कर्त्तव्यों को बहुत अच्छे तरीके से जानती हैं।

उनमें करुणा, दया, धैर्य, सहनशीलता आदि कई गुण होते हैं। वे शिक्षक होने के साथ–साथ एक माता के समान बच्चों के हृदय के मनोभावों को शीघ्रता से समझ लेती हैं और बच्चे भी उनके साथ अपने आप को सुरक्षित और सहज महसूस करते हैं। वे अपनी समस्याओं को उनके साथ आसानी से बाँट सकते हैं और शिक्षिकाएँ मातृत्व की भावना के कारण बच्चों से बहुत जल्दी जुड़ जाती हैं और उनकी समस्याओं का समाधान करने का पूरा प्रयत्न करती हैं।

एक महिला शिक्षक होने के नाते मैं समझ सकती हूँ कि महिला शिक्षक किस प्रकार अपने कर्तव्यों का निर्वाहन भलीभाँति करती हैं। आज महिला शिक्षक भी अपने आपको तकनीकी रूप से बहुत सुदृढ़ बना रही हैं। चाहें ऑनलाइन टीचिंग की बात हो या फिर नवाचारों की या नई तकनीकों का प्रयोग करने की, कहीं भी महिला शिक्षक पुरुष शिक्षकों से पीछे नहीं हैं। सभी का मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास करना ही है। इस प्रयास में महिला शिक्षक भी अपना योगदान दे रही हैं।

उच्च प्राथमिक स्कूलों में भी महिला शिक्षक अपनी छात्राओं की समस्याओं को भलीभाँति जानती हैं और उनका समाधान भी माता की भाँति करती हैं। महिला शिक्षक शिक्षा जगत में नई ऊँचाइयाँ छू रही हैं। बच्चों में नैतिक मूल्यों की समझ विकसित करना, उन्हें किस प्रकार पढ़ाया जाए कि वे अच्छे तरीके से समझ जाएँ, बच्चों के साथ–साथ उनके माता–पिता को भी शिक्षा का महत्व बताना, बच्चों को जिम्मेदार नागरिक बनाना। यह सभी कार्य महिला शिक्षक बखूबी कर रही हैं तथा इसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। वास्तव में महिला शिक्षकों का शिक्षा क्षेत्र में बहुत बड़ा योगदान है। इसके लिए उनका बहुत–बहुत धन्यवाद और आभार।

मीना भाटिया,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय डाढ़ा,
विकास खण्ड–दनकौर,
जनपद–गौतमबुद्ध नगर।

स्थूलता निवारण में कुंजल की अहम भूमिका

कोई भी कार्य करने हेतु स्वस्थ व शुद्ध शरीर अति आवश्यक है। शरीर की शुद्धि के लिए ऋषियों ने षटकर्म क्रिया का प्रावधान रखा है। उनके अनुसार जिन मनुष्यों में कफ व स्थूलता की अधिकता हो उन्हें शरीर के मल शोधन के लिए षटकर्म करना चाहिए।

षटकर्म = षट् कर्म इसका मतलब छः क्रियाएँ। इन छः क्रियाओं में मोटापा निवारण में कुंजल क्रिया अत्यन्त उपयोगी होता है।

कुंजल क्रियाः– यह क्रिया षटकर्म में धौति क्रिया के अंतर्गत आती है। इसमें साधक शौच के पश्चात पैरों के पंजों के बल बैठकर कम से कम आठ गिलास पानी पीकर आगे झुककर उसे वमन (उल्टी) द्वारा वापिस बाहर निकाल देते हैं।

सावधानी :–

1. वमन (उल्टी) क्रिया में बहुत अधिक जोर न लगाएँ।
2. मन को इस क्रिया हेतु तैयार कर लें।
3. आमाशय पूर्णतः खाली हो जाता है। अतः एक घंटे बाद ही कुछ खाएँ।
4. क्रिया के तुरंत बाद स्नान न करें। एक घंटे बाद करें या एक घंटे पहले।
5. निम्न रक्तचाप, उच्च रक्तचाप, हृदय रोगी, मिर्गी, अल्सर और हर्निया वाले इस अभ्यास से दूर रहें।
6. यदि मौसम ठंडा हो तो यह क्रिया बाहर खुले में नहीं करनी चाहिए।
7. पहली बार योग्य योगा आचार्य की उपस्थिति में करें।

कुंजल के अन्य लाभः–

1. कफ व स्थूलता को दूर करने के कारण मोटापा मुक्ति में पूर्ण मदद इससे मिलती है।
2. अल्सर व अति अम्लता में लाभकारी है।
3. सिर दर्द व माइग्रेन में बहुत ज्यादा फायदा मिलता है।
4. सड़ा भोजन बाहर निकल जाने से मुँह से आने वाली दुर्गन्ध समाप्त होती है।
5. भारीपन, कब्ज, मितली आदि से छुटकारा मिलता है।
6. पाचन सम्बन्धी विकार दूर होते हैं।
7. गैस की समस्या से निजात मिलता है।
8. सर्दी – खाँसी में लाभ मिलता है।
9. आँखों की रोशनी बढ़ती है।
10. दमा में अत्यधिक आराम मिलता है।

शिल्पी गोयल,
सहायक अध्यापक,
संविलियन विद्यालय निजामपुर,
विकास खण्ड–सिकंदराबाद,
जनपद–बुलंदशहर।

गिल्ली या गुल्ली डंडा

शिक्षण संवाद

गिल्ली डंडा बहुत प्राचीन भारतीय खेल है। इसे सामान्यतः एक बेलनाकार लकड़ी से खेला जाता है जिसकी लंबाई बेसबॉल या क्रिकेट के बल्ले के बराबर होती है। इसी की तरह की छोटी बेलनाकर लकड़ी को गिल्ली कहते हैं जो किनारों से थोड़ी नुकीली या घिसी हुई होती है। कुछ साल पहले तक अक्सर बच्चे हाथ में एक डंडा और गुलली लेकर खेलते हुए नजर आते थे किंतु समय के साथ–साथ ये खेल लगभग लुप्त होने के कगार पर आ गया है। इस खेल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसमें खेल सामग्री के नाम पर कुछ भी खर्चे वाली बात नहीं है। बस इसमें केवल एक २–३ फीट लकड़ी का डंडा और एक गुल्ली जिसके दोनों किनारों को नुकीला कर दिया जाता है जिससे उस पर डंडे से मारने पर गुल्ली उछल पड़ती है। अधिकतर यह खेल मकर संक्रांति पर खेला जाता है। इस खेल का प्रचलन केवल भारत में ही है। यह बहुत ही मनोरंजक खेल है। संक्रांति के अलावा भी इस खेल को खेलते हुए भारत के गली मोहल्लों में देखा जा सकता है। गिल्ली डंडा से ही प्रेरित होकर गोल्फ का अविष्कार हुआ। इस खेल के कुछ नियम भी है जो कि बहुत आसान हैं। खेल शुरू होने से पहले जमीन पर एक 2 इंच गहरा और 4 इंच लंबा गड्ढा खोदा जाता है। एक खिलाड़ी वह गड्ढे पर गिल्ली को टिकाकर जोर से डंडे के द्वारा दूर फेंकता है और दूसरे खिलाड़ी उसे लपकने के लिए तैयार रहते हैं। अगर गिल्ली लपक ली जाती है तो वह खिलाड़ी बाहर हो जाता है और यदि गिल्ली जमीन पर गिर जाती है तो गिल्ली उठाकर डंडे को मारा जाता है। फिर डंडे को उस खिलाड़ी द्वारा रख लिया जाता है अब दूसरी टीम को डंडे को निशाना बनाकर मारा जाता है। यदि गिल्ली को गड्ढे पर रखे डंडे पर निशाना साध दिया तो भी खिलाड़ी बाहर हो जाता है और अगर नहीं तो अब वह खिलाड़ी अपना डंडा लेकर गिल्ली के एक सिरे को डंडे से मारता जाता है और गिलली हवा में उठते ही डंडे की सहायता से दूर से दूर भेजी जाती है जिसकी गिलली जितनी दूर जाती है वही खेल में जीत जाता है। उस दूरी से गड्ढे की दूरी को डंडे द्वारा मापा जाता है और उतने ही अंक उस टीम को मिलते हैं। इसमें कोई भी हार की भावना नहीं होती है। यह खेल भावना के खेल से खेला जाने वाला खेल आज लगभग लुप्त हो रहा है। इस खेल में खिलाड़ियों की संख्या कितनी भी हो सकती है। 2–4, 10 या इससे भी अधिक।

सावधानी

इस खेल में आँख में चोट लगने की संभावना रहती है। अतः यह खेल बहुत ही सावधानीपूर्वक और खुले स्थान पर खेलना चाहिए।

रेनू शर्मा,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर,
विकास खण्ड–लोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

बाल रत्न

सितंबर महीने की मेरी उड़ान प्रतियोगिता में जनपद बदायूँ के प्राथमिक विद्यालय करनपुर विकास क्षेत्र बिसौली की कक्षा 5 की छात्रा रुखसार द्वारा मेरे अध्यापक विषय पर लघु कथा लेखन में प्रतिभाग किया गया।

जिसको राज्य स्तर पर विजेता घोषित किया गया।

यह हमारे विद्यालय की बहुत होनहार छात्रा है। पढ़ाई लिखाई के साथ–साथ चित्रकला में भी बहुत होशियार है। इसको 50 तक पहाड़े भी पक्के–पक्के याद हैं। उत्तर प्रदेश के 18 मंडल तथा 75 जिलों के नाम याद हैं तथा भारत देश के सभी राज्य व उनकी राजधानियाँ भी याद हैं। शिव तांडव स्तोत्रम, रुद्राष्टकम तथा श्रीमद भगवत गीता के कुछ श्लोक भी याद हैं।

साभार–
अमित बाबू,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय करनपुर,
विकास क्षेत्र–बिसौली,
जनपद–बदायूँ।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1-फेसबुक पेज: https://m.facebook.com/shikshansamvad/

2- फेसबुक समूह: https://www.facebook.com/groups/1180108654646 49/

3- मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉग : https://www.shikshansamvad.blogspot.in

4-Twitter(@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad

5-यू-ट्यूब: https://www.youtube.com/channel/UCPbbM1f9CQuxLymELvGgPig

6— व्हाट्सएप नं0 : 9458278429

7— ई मेल : shikshansamvad@gmail.com

8— वेबसाइट : www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार
पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात